अध्याय 6

औद्योगिक परिदृश्य

हम प्रातः उठने से लेकर रात को सोने तक प्रतिदिन अनेक वस्तुओं का उपयोग करते हैं जैसे– टूथब्रश व टूथपेस्ट, साबुन, कपड़े, पेन, कागज, परिवहन के साधन, सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुएँ, कम्प्यूटर, बिस्किुट, बर्तन, घड़ी, कपड़े आदि। अब सोचिए कि इन सब वस्तुओं का निर्माण कहाँ होता है? ये सब वस्तुएँ किसी न किसी औद्योगिक इकाई में ही बनती है।

क्या आप जानते हैं–

आर्थिक क्रियाएँ–वे समस्त क्रिया–कलाप जिनमें मानव अपने और अपने परिवार का भरण–पोषण और जीवनयापन करता है एवं जिनसे उसे धन की प्राप्ति होती है, सामान्यतः आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं।

कृषि, वानिकी, पशुपालन, मत्स्यपालन, खनन, विनिर्माण, परिवहन और अन्य कई सेवाएँ, जिनका उद्देश्य लाभ प्राप्त करना होता है, आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। आखेट, भोजन संग्रहण, पशुपालन, मछली पकड़ना, कृषि, खनन आदि को प्राथमिक व्यवसाय कहा जाता है। उद्योग को द्वितीयक तथा पर्यटन, व्यापार एवं संचार आदि को तृतीयक व्यवसाय कहा जाता है। कच्चे माल की सहायता से हमारे लिए उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करने वाली इकाई को विनिर्माण या उद्योग कहा जाता है। इस प्रक्रिया में कच्चे माल की उपयोगिता एवं कीमत दोनों में वृद्धि होती है। गन्ने से शक्कर बनाना, कपास से कपड़ा बनाना, गेहूँ से बिस्कुट बनाना, लोहे से उपकरण बनाना, सोने से आभूषण बनाना आदि द्वितीयक व्यवसाय के उदाहरण हैं। कृषि एवं खनन का अध्ययन हमने पिछले अध्यायों में किया है। इस अध्याय में हम द्वितीयक व्यवसायों का अध्ययन करेंगे।

राजस्थान में कई प्रकार के उद्योगों का विकास किया गया है। यहाँ विभिन्न प्रकार के वस्त्र निर्माण, कुटीर एवं घरेलू उद्योग बहुत पुराने हैं। यही लघु एवं कुटीर उद्योग अब धीरे–धीरे बड़े उद्योग बन गए हैं, जिनका राजस्थान की अर्थव्यवस्था में अहम योगदान है।

कौशल विकास

वर्तमान में संपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी युवक रोजगार की तलाश में भटकते रहते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु वर्तमान में विद्यालयी स्तर से ही विभिन्न क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा का पाठ्यक्रम लागू करने की योजना बनाई है, जिसे कौशल विकास योजना कहा जाता है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार की शिक्षा देना है कि युवक को अपनी शिक्षा ग्रहण कर लेने के तुरंत बाद ही स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके। इस में उद्यमिता कौशल विकास के साथ ही इलेक्ट्रोनिक्स, इलेक्ट्रिकल, खाद्य प्रसंस्करण आदि जैसे व्यवसायों से संबंधित ऐसे विशिष्ट कौशल जो प्रशिक्षणार्थियों को अपना स्वयं का उद्यम प्रारंभ करने एवं रोजगार प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं, पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इसके लिए उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP), उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम (ESDP), व्यवसायिक कौशल

विकास कार्यक्रम (BSDP), औद्योगिक प्रेरक अभियान (IMC), व्यावसायिक और शैक्षणिक प्रशिक्षण आदि कार्यक्रम चलाए गए हैं।

उद्योगों का वर्गीकरण– उद्योगों का वर्गीकरण आकार, स्वामित्व एवं कच्चामाल के आधार पर किया जा सकता है।

आकार के आधार पर

- कुटीर उद्योग
- लघु उद्योग
- वृहत उद्योग

उद्योगों के आकार का तात्पर्य उसमें लगाई गई पूँजी, श्रमिकों की संख्या, उत्पादन की मात्रा, बिजली का उपभोग आदि से है। **कुटीर या घरेलू उद्योग** छोटे पैमाने के उद्योग हैं, जो अपने परिवार के सदस्यों की सहायता से अपने घर पर चलाए जाते हैं। जिसमें शिल्पकारों के द्वारा उत्पादों का निर्माण हाथ से किया जाता है। टोकरी बुनाई, मुर्गीपालन, स्वेटर बनाना, लकड़ी के उपकरण, मिट्टी के बर्तन, रस्सी बनाना आदि कुटीर उद्योगों के उदाहरण हैं।

लघु उद्योग वे उद्योग है जिनमें 10 से 100 श्रमिक किसी छोटे कारखाने में उत्पादन कार्य करते हैं। इनमें मशीनें छोटे पैमाने की होती हैं। माचिस उद्योग, ईंट उद्योग, रंगाई–छपाई उद्योग आदि इसके उदाहरण हैं। **वृहत आकार** के उद्योगों में अधिक पूँजी का निवेश, उच्चस्तरीय प्रौद्योगिकी और श्रमिकों की संख्या अधिक होती है। सूती वस्त्र, सीमेंट, लोहा इस्पात, ऑटोमोबाईल्स उद्योग आदि वृहद् उद्योगों के उदाहरण हैं।

स्वामित्व के आधार पर

निजी क्षेत्र	सार्वजनिक क्षेत्र	संयुक्त क्षेत्र	सहकारी क्षेत्र
(स्वामित्व एवं संचालन व्यक्ति एवं व्यक्तियों द्वारा)	(स्वामित्व एवं संचालन) (सरकार द्वारा)	(स्वामित्व एवं संचालन निजी व सरकारी)	(माल की पूर्ति कर्ता व कामगार)

वे सभी उद्योग जिनका स्वामित्व एवं संचालन एक या एक से अधिक व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है, निजी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं। **सार्वजनिक क्षेत्र** के उद्योगों का स्वामित्व और संचालन सरकार द्वारा होता है जैसे हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड और हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड। **संयुक्त क्षेत्र** के उद्योगों का स्वामित्व और संचालन राज्यों और व्यक्ति समूहों द्वारा होता है। मारूति उद्योग लिमिटेड़ संयुक्त क्षेत्र के उद्योग का उदाहरण है। **सहकारी क्षेत्र** के उद्योग का स्वामित्व और संचालन कच्चेमाल के उत्पादकों या पूर्तिकारों, कामगारों अथवा दोनों द्वारा होता है। आनंद मिल्क यूनियन लिमिटेड़ एवं सरस डेयरी सहकारी उपक्रम इसके उदाहरण हैं।

कच्चे माल के आधार पर

कृषि आधारित	समुद्र आधारित	खनिज आधारित	वन आधारित
(सूती वस्त्र एवं शक्कर आदि)	(समुद्र खाद्य प्रसंस्करण, मत्स्य तेल आदि)	(खनिज अयस्क, आभूषण आदि)	(औषधी, कागज, फर्नीचर आदि)

ऐसे सभी उद्योगों को कृषि आधारित उद्योगों में सम्मिलित किया जाता है जिनमें कच्चे माल के रूप में कृषि उत्पादों का उपयोग किया जाता है। जैसे–खाद्य संसाधन, वनस्पति तेल, सूती वस्त्र, डेयरी उत्पाद और चमड़ा उद्योग आदि। समुद्र आधारित उद्योगों में सागरों और महासागरों से प्राप्त उत्पादों का उपयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है। समुद्री खाद्य प्रसंस्करण और मत्स्य तेल निर्माण उद्योग इसके उदाहरण हैं।

खनिज आधारित उद्योगों में खनिज अयस्कों का उपयोग कच्चे माल के रूप में करते हैं। इन उद्योगों के उत्पाद अन्य उद्योगों का पोषण करते हैं। अयस्क से निर्मित लोहा खनिज आधारित उद्योग का उदाहरण हैं। इसे आधारभूत उद्योग भी कहा जाता है क्योंकि इस पर कई अन्य उद्योगों का विकास होता है, जैसे भारी मशीनें, भवन निर्माण सामग्री तथा रेल के डिब्बे बनाना आदि प्रमुख हैं। **वन आधारित उद्योगों में** वनों से प्राप्त उत्पाद का उपयोग कच्चे माल के रूप में करते हैं। बाँस का सामान, फर्नीचर, झाड़ू, बीड़ी, माचिस उद्योग लुगदी एवं कागज, औषधी, कत्था, गोंद आदि वनों से सम्बन्धित उद्योग हैं।

आओ करके देखें –

आप अपने गाँव/शहर या मौहल्ले के विभिन्न उद्योगों की सूची तैयार कीजिए। यह भी पता लगाइए कि इन विभिन्न व्यवसायों/उद्योगों के लिए कच्चा माल क्या है और कहाँ से आता है?

लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास

कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास के लिए राजस्थान लघु उद्योग निगम प्रयासरत है। यह निगम रियायती दरों पर ऋण, तकनीकी सहायता एवं विपणन की सुविधाएँ प्रदान करता है। इन उद्योगों से राज्य के कई लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। जेल के अन्दर भी कैदियों को प्रशिक्षण देकर दरी, गलीचे, निवार, कम्बल आदि वस्तुएँ बनाने में लगाया जाता है। वित्तीय साधनों की कमी, कच्चेमाल की कमी, सीमित बाजार, उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता, ऊर्जा की कमी, अवशिष्ट पदार्थों के उपयोग की सीमित संभावना, अनुसंधान और आधुनिक प्रौद्योगिकी की जानकारी का अभाव आदि लघु व कुटीर उद्योगों की प्रमुख समस्याएँ हैं।

मिट्टी से बर्तन निर्माण चित्र

बाँस से वस्तुओं का निर्माण

राजस्थान के कुटीर एवं लघु उद्योग

हथकरघा उद्योग बहुत कम पूँजी के विनियोग पर भी रोजगार प्रदान करता है। ऊनी शाल, कोटा

की डोरिया साड़ियाँ, दरियाँ, निवार आदि का निर्माण हथकरघा से किया जाता है। प्रायः बुनकर इस कार्य को राजस्थान के अनेक जिलों में करते हैं। अन्य धागों की उपयोगिता निरन्तर बढ़ने से यह उद्योग प्रतिस्पर्धा में पिछड़ गया है। हमारी सरकार हथकरघा उद्योगों के विकास के लिए अनेक योजनाएँ संचालित कर रही हैं। 'एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम' के द्वारा बुनकरों को सहायता प्रदान करता है। गृहविहीन बुनकरों को आवास योजना में मकान एवं अन्य योजनों में औद्योगिक प्रशिक्षण दिया जाता है। राज्य सरकार द्वारा बिक्री कर में छूट, बिक्री केंद्र की स्थापना, कार्यशील पूँजी हेतु ब्याज का अनुदान, यातायात अनुदान के रूप में बुनकरों को सहायता दी जाती हैं।

सूती, ऊनी, और रेशमी धागों से विभिन्न प्रकार के वस्त्र, दरियाँ, कम्बल, चद्दर, शॉल आदि बनाए जाते हैं। ऊनी खादी में जैसलमेर की बरडी, बीकानेर के कम्बल, जैसलमेर और जोधपुर की मेरिनों खादी प्रसिद्ध हैं। खादी एवं ग्रामोद्योग संस्थाओं के संचालन में सूती, ऊनी ओर रेशमी धागों से बनी वस्तुओं के अलावा मधुमक्खी पालन, अगरबत्ती निर्माण, चर्म उद्योग के अन्तर्गत जूते, चप्पल, पर्स, थेले आदि वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

हाथों से वस्त्र बनाती महिला

दलहन फसलों से दालें बनाना भी एक महत्त्वपूर्ण उद्योग है। चना, मूंग, उड़द, चवले आदि की दाल से संबंधित उद्योग राजस्थान के विभिन्न जिलों में पाए जाते हैं। कोटा, बूंदी, भीलवाड़ा और उदयपुर जिलों में गन्ने के रस से गुड़ और खाँडसारी का निर्माण किया जाता है। इन जिलों में यह उद्योग ग्रामीण स्तर पर अधिक लोकप्रिय है।

राज्य में सरसों तेल की खल, तेल से सम्बन्धित लघु एवं कुटीर उद्योगों का पर्याप्त विकास हुआ है। अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, जयपुर आदि जिलों में सरसों की अधिक पैदावार के कारण तेल घाणी उद्योग अधिक हैं। अजमेर जिले में मूँगफली के तेल की खल तथा कोटा, बूंदी, बाराँ व पाली जिलों में तिल्ली की खल एवं तेल से सम्बन्धित औद्योगिक इकाइयाँ कार्यरत हैं।

राजस्थान में हाथीदाँत और पीतल के भी आभूषण बनाए जाते हैं। चाँदी से बनी विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ जैसे पायजेब, चेन, अँगूठी, बिछियाँ आदि प्रदेश के विभिन्न नगरों एवं कस्बों में बनाई जाती हैं। पीतल और ताँबे के बर्तन राजस्थान के कई जिलों में बनाए जाते हैं। हजारों लोगों को इससे रोजगार उपलब्ध है, विभिन्न प्रकार के रत्नों की कटाई, घिसाई और पॉलिस भी एक प्रमुख कुटीर उद्योग बन चुका है। जयपुर में जौहरी बाजार सोने चाँदी के आभूषणों एवं रत्नों के लिए एक विश्व विख्यात केंद्र है।

राजस्थान में विभिन्न प्रकार के पत्थर बहुतायत में पाए जाते हैं। यहाँ पत्थरों की कटाई, पॉलिस, एवं पिसाई से सम्बन्धित कई लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास हुआ है। राजसमंद, नागौर, उदयपुर, अजमेर, बाँसवाड़ा आदि जिलों में संगमरमर, धौलपुर में लाल पत्थर, जैसलमेर में पीला पत्थर, कोटा में कोटा स्टोन

तथा जालोर में ग्रेनाइट उद्योग का विकास हुआ है। संगमरमर एवं ग्रेनाईट पत्थरों का निर्यात विदेशों में भी किया जाता है जिससे राज्य में इस उद्योग का बहुत विकास हुआ है।

संगमरमर उद्योग

इनके अतिरिक्त इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रोनिक्स से संबंधित उद्योग, कम्प्यूटर द्वारा प्रिन्टिंग, निमंत्रण पत्र व ग्रीटिंग कार्ड आदि तैयार करने सम्बन्धित उद्योग, छोटी मशीनें और उनसे सम्बंधित उपकरण, लोहे के बोल्ट, कील आदि बनाने के लिए भी कुटीर एवं लघु इकाइयों के रूप में कार्य कर रहे हैं।

वृहद उद्योग

राजस्थान में पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आधारभूत सुविधाओं का विस्तार जैसे ऊर्जा के साधन, पानी, परिवहन, संचार, बैंकिग व्यवस्था आदि से औद्योगिक परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के साथ ही राज्य को औद्योगिक दृष्टि से राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है।

सूती वस्त्र उद्योग

कपड़ा मानव की प्रमुख जरूरतों में से एक है। इसीलिए सूती वस्त्र उद्योग विश्व के प्रमुख एवं प्राचीनतम उद्योगों में से एक है। 18वीं सदी की औद्योगिक क्राँति तक सूतीवस्त्र हस्तकताई तकनीकों एवं हथकरघों से बनाये जाते थे। हमारे देश में उच्च गुणवत्ता के सूतीवस्त्रों का उत्पादन करने की गौरवपूर्ण परम्परा रही है। ब्रिटिश शासन से पूर्व हाथ से कताई और हाथ से बुने हुए वस्त्रों का एक विस्तृत बाजार था। ढाका की मलमल, मसूलीपट्टनम् की छींट, कालीकट के केलिकों तथा बुरहानपुर, सुरत वड़ोदरा के सुनहरी जरी के काम वाले सूती वस्त्र गुणवत्ता और डिजाइनों के लिए विश्वविख्यात थे। वर्तमान में भारत में सूती वस्त्रों का सर्वाधिक उत्पादन महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्यों से होता है। मुम्बई को 'सूती वस्त्रों की राजधानी' कहा जाता है।

आधुनिक वस्त्र उद्योग

वस्त्र निर्माण राजस्थान का सबसे प्राचीन उद्योग है। इसकी पहली मिल अजमेर जिले के ब्यावर में 1889 में स्थापित हुई, लेकिन भीलवाड़ा जिले का राजस्थान में वस्त्र निर्माण में प्रमुख स्थान है। भीलवाड़ा को राजस्थान की 'वस्त्र नगरी' एवं राजस्थान का 'मेनचेस्टर' के नाम से जाना जाता है। वस्त्रों की रंगाई छपाई तथा बँधेज कार्य हेतु जयपुर (सांगानेर, बगरू), जोधपुर, चुरू, बीकानेर, नागौर प्रमुख केंद्र हैं। सिले–सिलाये वस्त्र की दृष्टि से जयपुर एवं जोधपुर प्रमुख है।

सीमेंट उद्योग

यह वर्तमान में प्रमुख भवन निर्माण सामग्री बन गया है। भारत में सर्वप्रथम सन् 1904 ई. में मद्रास (चेन्नई) में समुद्री सीपियों से सीमेंट बनाने का प्रयास किया गया। राजस्थान में इस उद्योग के विकास की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। राज्य का पहला सीमेंट कारखाना 1915 ई. में बूंदी जिले के लाखेरी में खोला गया था।

सीमेंट उद्योग

सीमेन्ट उत्पादन के लिए चूना पत्थर, जिप्सम एवं कोयला प्रमुख कच्चा माल है। इनमें से चूना पत्थर तथा जिप्सम राज्य में पर्याप्त मात्रा में मिलता है, लेकिन कोयला मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि अन्य राज्यों से मंगाया जाता है। कच्चे माल की उपलब्धि के कारण चित्तौड़गढ़ जिला सीमेंट उत्पादन के लिए आदर्श जिला माना जाता है। इसके अतिरिक्त जैसलमेर, कोटा, नागौर, पाली, सवाई माधोपुर, उदयपुर, अजमेर, बाँसवाड़ा आदि जिलों में भी सीमेंट इकाइयाँ कार्यरत है।

शक्कर उद्योग

यह एक कृषि आधारित मौसमी उद्योग है जिसका कच्चा माल गन्ना है, जो अधिकांशतः गन्ना उत्पादक क्षेत्र में ही स्थापित किया जाता है। राजस्थान की पहली शक्कर मिल 1932 ई. में चित्तौडगढ़ जिले के भूपालसागर में निजी क्षेत्र स्थापित की हुई थी, जो वर्तमान में बंद है। एक शक्कर मिल श्रीगंगानगर में स्थित है। बूंदी जिले के केशोरायपाटन में भी एक शक्कर मिल है, जो वर्तमान में बंद है।

क्या आप जानते हैं–

तीव्र औद्योगिक विकास एवं रोजगार के साधनों में वृद्धि के उद्देश्य से विशिष्ट आर्थिक क्षेत्रों (Special Economic Zone) का निर्माण किया जाता है, जिन्हें 'सेज' (SEZ) भी कहा जाता है। राज्य का सबसे बड़ा सेज सीतापुरा, जयपुर में स्थापित किया गया है।

अन्य उद्योग

इनके अलावा राज्य में इंजिनियरिंग एवं इंस्ट्रूमेंट्स उद्योग कोटा, भरतपुर, जयपुर, अजमेर, अलवर में सफलतापूर्वक स्थापित किए गए हैं। रासायनिक उद्योग डीडवाना, कोटा, अलवर, उदयपुर और चित्तौड़गढ़ में स्थापित हैं। झुंझुनू के खेतडी में खेतड़ी कॉपर कॉम्पलेक्स, उदयपुर में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड स्थित है। भिवाड़ी, पिलानी, जोधपुर में इलेक्ट्रोनिक्स के कारखानें हैं।

क्या आप जानते हैं–

मेक इन इंडिया–इस शब्द का तात्पर्य है–भारत में बनाओ। इस योजना के माध्यम से भारत सरकार चाहती है कि हमारे जीवन में काम आने वाली सभी प्रकार की आवश्यक वस्तुओं का निर्माण भारत में ही हो। ऐसी सभी वस्तुओं पर 'मेड इन इंडिया' लिखा हुआ हो। यह तभी संभव है, जब वस्तु का निर्माण भारत में हुआ हो। इसका लाभ यह होगा कि देश में बनी वस्तु की कीमत कम होगी तथा वस्तुओं का निर्यात कर राजकीय आय में वृद्धि की जा सकती है।

आओ करके देखें–

अपने शिक्षक की सहायता से आपके जिले में स्थित प्रमुख उद्योगों की सूची बनाकर इनमें से किसी एक से संबंधित जानकारी एकत्र कर कक्षा में अपने साथियों से उसकी चर्चा कीजिए।

शब्दावली

मलमल	–	एक प्रकार का कपड़ा	उद्यम	–	व्यवसाय
अनुदान	–	सरकारी सहायता	बंधेज	–	रंगाई का एक प्रकार
मेरिनो	–	उन्नत किस्म की भेड़ प्रजाति	चवला	–	एक प्रकार का दलहन

अभ्यास प्रश्न

1. **सही विकल्प को चुनिए–**

(i) निम्नलिखित में से कौनसा उद्योग खनिज आधारित है–

(क) सूती वस्त्र उद्योग (ख) सीमेंट उद्योग

(ग) चमड़ा उद्योग (घ) शक्कर उद्योग ( )

(ii) किस उद्योग को मौसमी उद्योग कहा जाता है–

(क) आभूषण उद्योग (ख) ग्रेनाइट उद्योग

(ग) शक्कर उद्योग (घ) डेयरी उद्योग ( )

2. सुमेलित कीजिए–

	कच्चा माल	**उद्योग**
(i)	गन्ना	सूती वस्त्र उद्योग
(ii)	चूना पत्थर	हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड़
(iii)	ताँबा	खाँडसारी उद्योग
(iv)	सरसों	सीमेंट उद्योग
(v)	कपास	कच्ची घाणी उद्योग

3. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(i) कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास के लिए .....निगम प्रयासरत है।

(ii) राजस्थान में पहला सीमेन्ट कारखाना ..... जिले के..... में खोला गया था।

(iii) जोधपुर की ..... खादी प्रसिद्ध हैं।

(iv) जयपुर में ..... सोने चाँदी के आभूषणों एवं रत्नों के लिए एक विश्व विख्यात केंद्र है।

4. आकार के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण कीजिए।

5. राजस्थान की वस्त्र नगरी किसे कहा जाता है? और क्यों?

6. मेक इन इंडिया कार्यक्रम क्यों चलाया गया है?

7. उद्योग को कितने प्रकार में विभाजित किया जा सकता है ? उनके उदाहरणों की सूची बनाइए।

8. कुटीर उद्योग किसे कहते हैं? इनके कुछ उदाहरण दीजिए।

9. राजस्थान के वृहद् उद्योगों का वर्णन कीजिए।